जी20 में भारत की भूमिका : सतत् विकास के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन

(1999 से वर्त्तमान तक)

शोध सार

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

सामाजिक विज्ञान संकाय राजनीति विज्ञान विभाग में

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध सार

(शोधार्थी)

कृष्णा नन्द

पंजीकरण संख्या– (...)

द्वारा

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

शोध निदेशक

डॉ0 प्रवीण सिंह (सह–प्राध्यापक)

विश्वविद्यालय राजनीतिक विज्ञान विभाग एवं

प्राचार्य आर एस मोर कॉलेज, धनबाद

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

जनवरी, 2024

परिचय

जी20 एक वैश्विक मंच है जो 19 देशों और यूरोपीय संघ से बना है। जो पूरे दुनिया की प्रमुख विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाओं का संपूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। जी20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 85 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का 75 प्रतिशत और दुनिया की दो तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करता है। जी20 की शुरुआत 1999 में कई वित्त मंत्रियों एवं केंद्रीय बैंकों के गर्वनर के साथ हुई थी। वर्ष 2008 में सबसे ज्यादा वित्तीय संकट आने के कारण सभी नेतागणों के स्तर पर जी20 की एक बैठक कराई गई, यह बैठक नवंवर 2008 में वाशिंगटन डीसी में पहली बार जी20 नेतागणों के माध्ययम से बैठक का सफल आयोजन किया गया था। साथ ही अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने हेतु एवं राजकोषीय मौंद्रिक और आर्थिक नीतियों का समावेश को जी20 मंच द्वारा व्यवस्थित रूप से विकसीत किया गया। भारत को 16 नवंबर 2022 के बाद से जी20 का अध्यक्षात्मक प्रतिनिधित्व मिलने पर शिखर सम्मेलन का आयोजन भारत में 1 दिसंबर 2022 को शुरू हुई और 30 नवंबर 2023 तक चला। भारत द्वारा जी 20 प्रेंसीडेंसी थीम– वसुधैव कुटुम्बकम यानी – ''वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर, का सुभारंभ किया। भारत जी 20 लोगों में ही राष्ट्रीय ध्वज के रंगों में डिजाईन किया गया था। जो हमारे पृथ्वी के समर्थक दृष्टिकोण और चुनौतियों के बीच विकास का प्रतीत है। [1]

जी 20 वैश्विक मंच होने के साथ साथ फायरफाईटर होने से संरचनात्मक द्वारा वैश्विक चुनौतियों को सुलझाने हेतु भविष्य निधि को बेहतर करने के लिए अद्वितीय कार्यों का समावेश को वैश्विक मंच में बदल दिया है। जी 20 में भारत की भूमिका वर्तमान समय में सतत् विकास के लिए प्रतिबद्ध है। जिसमें भारत अपनी अध्यक्षता में अंतराष्ट्रीय मंच 20 के समूह (जी 20) में 19 देश (अर्जेटीना, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, कनाड़ा, चीन, भारत, इटली, जापान, कोरिया, गणराज्य, सऊदी अरब, मैक्सिको, रूस, दक्षिण अफ्रिका, तुर्कि, यूनाईटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) और यूरोपीय संघ इसमें सामिल है।[2]

जी20 अध्यक्षता प्राप्त करने के बाद भारत वैश्विक रूप से सतत् विकास के मूल अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए वैश्विक रूप से मानव समाज को भविष्य की पीढ़ियों को अपनी संसाधनों की आवश्यकताओं को पूरा करने की समता करना चाहिए। सतत् विकास का विचार आज काफी प्रासंगिक हुआ है क्योंकि औद्योगिक क्रांति सतत् विकास के विचार से उदय से जुड़ी हुई है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से पश्चिमी समाजों ने यह जानना शुरू कर दिया कि आर्थिक और औद्योगिक गतिविधियों का पर्यावरण और सामाजिक संतुलन पर काफी ज्यादा महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

इस शोध प्रस्ताव में यह पाया गया कि कई परिस्थितियों और सामाजिक संकट आए जिससे हमें यह जागरूक कर दिया कि हम अपने भावी पीढ़ियों के लिए वर्तमान संसाधनों की जरूरतों को भविष्य के लिए समझें। सतत् विकास के मूल उद्देश्य सभी देशों के गरीब, अमीर, माध्यम आय वाले के लिए काफी ज्यादा प्रासंगिक होता है। ताकि हमारा पर्यावरण की रक्षा और जलवायु परिवर्तन से बेहतर होने के दौरान समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके।

सतत् विकास मूलत : विशेष रूप से महिलाओं बच्चों और वंचित आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक साथ सुधार करने की जरूरत है। ताकि कोई भी पीछे न रहे। संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत् विकास के 169 लक्ष्यों में से 17 लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश वर्ष 2030 तक पूरा करने के लिए सहमत हुए है। कोई गरीब नहीं, शून्य भूख लक्ष्य, अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण, लक्ष्य, गुणवतापूर्ण शिक्षा, लक्ष्य, स्वच्छ

जल, वहनीय और स्वच्छ उर्जा लक्ष्य, अच्छा काम और आर्थिक विकास लक्ष्य, उद्योग नवाचार और बुनियादी ढांचा लक्ष्य, असमानता में कमी लक्ष्य, सतत् शहर और समुदाय लक्ष्य, जिम्मेदार खपत और उत्पादन लक्ष्य शांति और न्याय मजबूत संस्था इन लक्ष्यों को मूलभूत सुविधाएं प्रदान किया जाना है।

- जी20 में भारत की अहम भूमिका [3]
- जलवायु परिवर्तन एवं सततः विकास

भारत सतत् विकास एवं जलवायु परिवर्तन में वैश्विक मंच पर अपना खास भूमिका निभा रहा है। भारत का ध्यान विकासशील देशों को उनकी अनूकूल जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वित्तीय और तकनीकि सहायता प्रदान करने के लिए विकसित देशों की सफल सतत विकास के अवधारणा को अपनाया है।

- डिजिटल उद्योग और प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय में भारत डिजिटल इंडस्ट्रीज में अपना प्रमुख प्रतिनिधित्व निभा रहा है। जिसमें जी20 शिखर सम्मेलन के मेजबान के रूप में भारत से प्रौद्योगिकी डिजिटल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सदस्यों के बीच काफी सहयोग की उम्मीद है। भारत द्वारा डेटा लाइब्रेरी, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटिलिजेंस पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया है।

- वित्तीय संस्थाएं और आर्थिक विकास

वर्तमान जी20 की अध्यक्षता में भारत बैठक की समीक्षा और नतीजों को आकर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिसमें मूल रूप से जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी, वित्तीय और आर्थिक विकास के साथ साथ स्वास्थ्य महामारी प्रतिक्रिया पर ध्यान केंद्रित की उम्मीद है। भारत का नेतृत्व दुनिया के लिए एक समावेशी लचीलापन और टिकाउ भविष्य बनाना एक वैश्विक विचार धारा है।

साहित्य की समीक्षा

- ओईसीडी रिपोर्ट (2023) भारत द्वारा जी20 में किए गए कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। [1]
- विदेश मंत्रालय (2023) भारत जी20 की अध्यक्षता के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। [2]
- मैती (2023) सेंटर फॉर सिविल सोसायटी जी20 में भारत की भूमिका का विशेष समीक्षा के बारे बताती है। [3]
- व्रीस (2024) *स्थिरता विज्ञानः 'सतत विकास पर्यावरण विज्ञान'* : व्रीस द्वारा इस पुस्तक में नीति, पारिस्थतिकी संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों और भू राजनीति में छात्रों और उने शिक्षक के लिए आदर्श इच्छुक नागरिकों, कार्यकत्ताओं और नीति निर्माताओं को उल्लेखित करता है। [4]
- गौंजालो (2024) *'जटिलता अर्थशास्त्र और सतत विकास'* : नीति प्राथमिकता अनुमान के लिए यह पुस्तक सतत् विकास के लक्ष्यों संयुक्त राष्ट्रों के वैश्विक उद्देश्यों की समीक्षा करता है। [5]

- बेंटन (2023) *'स्थिरता और सतत् विकास'* : लिसा द्वारा इस पुस्तक में संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्यों एवं समस्या के सामाधान में मदद करने के लिए वैश्विक मुद्दों को 2030 तक स्थिरता के लिए योजना बनाने और लागू करने के लिए मार्गदर्शन करती है। [6]
- डी सेक्स (2023) *'सतत् विकास रिपोर्ट'* : इस रिपोर्ट पुस्तक में सतत् विकास रिपोर्ट 2022 में एसडीजी सूचकांक और डैशबोर्ड शमिल है जो एजेंडा 2030 और सतत् विकास लक्ष्यों पर देश के प्रदर्शन का आकलन रूप है। [7]
- एम. व्हीलर (2022) *'सतत शहरी विकास पाठक'* इस पुस्तक में भूमि उपयोग शहरी डिजाईन परिवहन परिस्थति उर्जा, पर्यावरण न्याय, और हरित वस्तु कला को मूल्यवान संसाधन माना है। [8]
- डी सैक्स (2022) *'सतत् विकास के लिए कार्रवाई में नैतिकता'* इस पुस्तक में सतत् विकास लक्ष्यों में एक महत्वाकांक्षी और व्यापक एजेंडा शामिल है। [9]
- उराता (2022) *'समाज के लिए सतत विकास अनुशासन'* : इस पुस्तक में समृद्धि के लिए सतत् विकास के लिए नौ समस्या समाधान व्याख्यान प्रदान करती है। ये सतत विकास लक्ष्यों एसडीजी के पांच कीवर्ड में से दो है लोग, ग्रह, समृद्धि शांति और साझेदारी या ''5पी'' । [10]
- जे नस्त्र (2022) *ग्रह एः 'सतत विकास के लिए एक व्यवसायी का दृष्टिकोण'* : इस पुस्तक में आधुनिक सभ्यता एक सुपर ऑगेनिज्म की तरह है। इसके सिस्टम विकसित होते है और विशिष्ट वातावरण में पनपने के लिए अनुकूलित होते है । [11]
- एस (2022) *''सतत पर्यटन विकास''* इस पुस्तक में शोध अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि सतत विकास के अवधारणा विश्लेषण को प्रस्तुत करती है। इसके सामाजिक पर्यावरण की तबाही अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्थिरता को बताती है। [12]
- हैन (2022) *'स्थिरता प्रबंधन'* – इस पुस्तक शोध अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, वैश्विक रण, या जनसंख्या विकास जैसे मेगा रूझानों से प्रेरित, सतत् विकास और स्थिरता प्रबंधन अब लगभग सभी फर्मो के लिए चिंता का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गए है। [13]

शोध समस्या

सबसे बड़ी शोध समस्या यह है कि 1999 से वर्तमान तक जी20 में यूरोपीय संघ एवं 19 देशों के होने के वावजूद विकसित राष्ट्रों के तर्ज पर विकासील देश सतत् विकास में सफल लक्ष्यों को पूरा क्यों नहीं कर पा रहा है।

शोध का उद्देश्य

- जी 20 में भारत द्वारा की गई सतत विकास के प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- जी20 में भारत द्वारा जलवायु परिवर्तन, डिजिटल अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास के योगदानों का विश्लेषण करना।
- जी20 में भारत सतत विकास के स्थाई लक्ष्यों की पूर्ति कैसे कर रहा है, इसका अध्ययन करना।

- जी20 में भारत की नजर सतत विकास के लिए विकसित देशों के सकारात्मक प्रभावों को अपनाया है जिसका अध्ययन किया जाएगा।

- जी20 में भारत की पहल प्रेंसीडेंसी थीम ''वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर के सकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- जी20 में भारत सतत विकास के परिपेक्ष्य में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है।

- आज भारत जलवायु परिवर्तन, डिजिटल अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास में काफी अग्रसर है।

- जी20 में भारत सतत विकास के स्थाई उद्देश्यों को पूरा कर रहा है या नहीं इसका अध्ययन करना।

- जी20 में भारत : विकसित देशों के सतत विकास को अपनाने की राह में अग्रसर है।

- जी20 में भारत की पहल ''वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर, की राह में अग्रसर है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन समीक्षात्मक प्रवृत्ति का है। जिसमें ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तावित शोध में प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीय स्त्रोत दोनो का प्रयोग किया जायेगा।

प्राथमिक आंकड़े – जी20 द्वारा अंतरराष्ट्रीय समिट एवं सतत विकास के लेखन, दस्तावेजो एवं पत्रों को शामिल किया जाएगा।

द्वितीय आंकड़ा– इस पद्धित में पुस्तक, पत्र पत्रिका में छपे लेख, विभिन्न प्रकाशित और अप्रकाशित शोधकार्य, और डिजिटल मीडिया का भी उपयोग किया जाएगा, तथा जरूरत पड़ने पर साक्षात्कार विधि का भी सहारा लिया जाएगा।

शोध का महत्व

सतत विकास का वैश्विक मुद्दा है जिससे भारत इन सारी समस्याओं को समाप्त करना चाहता है भारत विकासशील देश होने के वावजूद विकसित देशों के तरीके को अपना कर सतत विकास के सभी मूल लक्ष्यों को बेहतर करना चाहता है ताकि हमारा संसाधन वर्तमान से भविष्य तक सुरक्षित एवं संरक्षित रहे इसलिए यह ज्यादा महत्वाकांक्षी है।

शोध की सीमाएं एवं भविष्य कार्य

प्रस्तावित शोध में जी20 एक वैश्विक संगठन है। जिसमें शोध की सीमाएं काफी व्यापक जिसमें कोई बड़ी समस्या नहीं है पंरतु वैश्विक स्तर की शोध में जी20 द्वारा की गई अनेको अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय कार्यक्रमों की रिपोर्ट इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, लेख, साक्षात्कार की माध्यम से किया जायेगा जिसमें थोड़ी बाधाएं आ सकती है। भविष्य में इस शोध रिपोर्ट द्वारा कई अनुसंधान शोधार्थियों को लाभ मिलेगा तथा अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राजकीय रिपोटों में काम आने की संभावना हो सकती है। जो भविष्य के लिए सुरक्षित होगी।

संभावित अध्यायीकरण

प्रस्तावना

- प्रथम अध्याय– जी20 की स्थापना एवं सतत विकास की अवधारणा
- द्वितीय अध्याय– जी20 में भारत की स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- तृतीय अध्याय– पर्यावरण प्रदूषण एवं आर्थिक विकास : जी20 में भारत की भूमिका
- चतुर्थ अध्याय– सतत विकास के मुद्दे और भारत की नीतियों का समीक्षात्मक अध्ययन
- पंचम अध्याय– सतत विकास के वैश्विक चुनौतियां एवं समाधान : भारत के संदर्भ में

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

1. ओईसीडी, (2023)। जी20 का सक्रिय भागीदार और रणनीति सलाहकार 1

https://www.oecd.org/g20/about/

2. विदेश मंत्रालय, (17 अप्रैल 2023) पी0आईबी दिल्ली। 2

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1917184#

3. मैती, (2023). सेंटर फॉर सिविल सोसायटी में जी20 शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका बैठक के एजेंडे और परिणाम को आकार देने में महत्वपूर्ण रही है।

https://azadi.me/node/3006

4. डी व्रीस, जे एम बर्ट. (8 फरवरी 2024) *स्थिरता विज्ञानः सतत विकास पर्यावरण विज्ञान* : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, दूसरा संस्करण

https://www.amazon.com/dp/10093001992

5. गौंजालो, (25 जनवरी 2024) *जटिलता अर्थषास्त्र और सतत विकास* : आईएसबीएन– 1538136696

6. बेंटन, लिसा. (23 फरवरी 2023) *स्थिरता और सतत् विकास* : आईएसबीएन – 1538135353 प्रकाषन लेटावल रोमन

https://www.amazon.com/dp/1538135353?tag=uuid10-2023

7. डी सेक्स, जेफरी. (5 जनवरी 2023) : *सतत् विकास रिपोर्ट* 2021 : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, दूसरा संस्करण

https://www.amazon.com/dp/1009098918?tag=uuid10-2023

8. एम. व्हीलर, एम स्टीफन. (30 दिसंबर 2022) : *सतत शहरी विकास पाठक–*

9. डी सैक्स, जैफरी. (09 दिसंबर 2022) : *सतत् विकास के लिए कार्रवाई में नैतिकता–* एम एस व्हीलर – प्रकाषन राउट लेज प्रेस द्वारा आईएसबीबीएन–10 – 32214090

https://www.amazon.com/dp/0231202865?tag=uuid10-20

10. उराता, सुजिरो. (3 दिसंबर 2022) : *समाज के लिए सतत विकास अनुषासन* : आईएसबीबीएन–10 – 9811951446, प्रकाषन स्प्रींगर प्रेस

https://www.amazon.com/dp/9811951446?tag=uuid10-20

11. जे नस्त्र, जे जॉर्ज. (2 अगस्त 2022) *ग्रह एः सतत विकास के लिए एक व्यवसायी का दृष्टिकोण* : आईएसबीबीएन–10 – 1544530218, प्रकाषन हाउंड स्टुथ प्रेस

https://www.amazon.com/dp/1544530218?tag=uuid10-20

12. एस, अलेक्सा. (25 फरवरी 2022) सतत पर्यटन विकास : स्वतंत्र रूप से प्रकाषित – आईएसबीबीएन–13 – 9798423142964

https://www.amazon.com/dp/B09TDSHV2D?tag=uuid10-20

13. हैन, रूडिगर. (12 फरवरी 2022) *स्थिरता प्रबंधन* आईएसबीएन 10 3982321107, 3982321103

14. हैन, रूडिगर (2022) जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, वैश्विक रण, या जनसंख्या विकास जैसे मेगा रूझानों से प्रेरित

https://www.amazon.com/dp/3982321107?tag=uuid10-20

15. एस, अलेक्सा (2022) इसके सामाजिक पर्यावरण की तबाही अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्थिरता को बताती है

https://www.amazon.com/dp/B09TDSHV2D?tag=uuid10-20

16. नस्त्र, जार्ज जे (2022) इसके सिस्टम विकसित होते है और विषिष्ट वातावरण में पनपने के लिए अनुकूलित होते है

https://www.amazon.com/dp/1544530218?tag=uuid10-20

17. डी. सैक्स, जैकरी (2022) इस पुस्तक में सतत् विकास लक्ष्यों में एक महत्वाकांक्षी और व्यापक एजेंडा षामिल है

https://www.amazon.com/dp/B0CLMP34MV?tag=uuid10-20

18. वेंटन लिसा (2023) इस पुस्तक में संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्यों एवं समस्या के सामाधान में मदद करने के लिए वैश्विक मुद्दों को 2030 तक

https://www.amazon.com/dp/1538135353?tag=uuid10-20

ग्रंथ सूची

1. डी0 ब्रीस, वर्ट जैएम (2024) स्थिरता विज्ञान, द्वितीय संस्करण हिन्दी माध्यम क्रेम्ब्रीज विश्वविद्यालय प्रेस 1155151

2. याफोगमैन, एन डिबागुइन (2023) सतत् विकास और नवउदारवाद, माध्यम अंग्रेजी, अवर नॉलेज प्रकाशन

3. वैनिटस लाजरो, लीरा लूज (2023) लेटिन अमेरिका में उर्जा सतत विकास का कठिन मार्ग, प्रकाशन स्प्रींगर

4. चिचरो, मारिया एंजेलिका (2023), कॉपरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास

5. वेव रेमी, (2023), सतत पर्यटन विकास और प्रबंधन, माध्यम अंग्रेजी, पब्लिकेशन स्टेट्स एकडेमिक प्रेस

6. कुज्नि अर्स्का, अनिता (2023), सतत विकास का आयोजन, प्रथम संस्करण आइएसबीएन 1432459512

7. मार्गी टोरेस (2023) छोटे द्वीपों में सतत पर्यटन विकास आइएसबीएन 979857885505

8. हान लेउंगा, चेग टिफ़नी (2023) स्वास्थ्य देखभाल में पर्यावरण, सामाजिक और षासन और सतत विकास प्रथम संस्करण आइएसबीएन 13ः 9989819915637 पब्लिकेशन स्प्रींगर प्रेस

9. बाउटोड, आरेलीन (2015), ले विकास टिकाउं : पेंसर ले चेंजमेंट या चेंलर ले पैसमेंट ? विलन एट एनालिसिस डेस, आउटिस डी,

10. ब्रांड, कार्ल वर्नर (1997)ः नचाल्टिज एंट विकलुग एक हेराउफोर्डरग और डाई सोजिथोलोजी

1 1. स्थानीय विकास के लिए संघीय कार्यालय (2012) सतत विकास का सामाधान

12. सतत विकास के जर्मन परिषद (2012) फेसिंग सस्टेनेविलिटी अवार्ड

14. हॉपवुड, विल एट अल, 2005 सतत विकास विभिन्न दृष्टिकोण का मानत्रिण पेज 38—52

15. लाटौचे, सर्ज (1999), ला डबल इम्पोचर डु टिकाउ सतत विकास का सामाधान पेज 36—42